61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 106

कब तक इंतज़ार करूँ .....

"तान्या दी ! क्या बात है, आप आज बड़ी खुश नज़र आ रही हैं" । अनजाने ही मेरे होंठो पर मुस्कान जाग उठी । "छोटी आज मेरा जन्मदिन जो है ! इस बार मैं ज़रूर माँ से मिलूँगी" । यह सुनते ~~ही~~ ही उसका चेहरा उतर गया । "दीदी । आप ~~अब भी~~ अब भी उनकी इंतज़ार में है क्या ? कितनी बार कहूँ आपसे । अगर उन्हें ~~तुम्हारी~~ आपकी कोई चिंता थी तो ~~तुम्हें~~ आपको छोड़कर जाते ही नहीं" । सौम्या दीदी जल्दी से कमरे में आई और छोटी को देखकर कहने लगी "छोटी, तुझे बोला था न मैंने ? की इस बात पर अब कोई लड़ाई नहीं होगी ?" । छोटी का चेहरा गुस्से से लाल होने लगा । "बात नहीं तो और क्या करूँ ? मुझसे बड़ी है ये । और अब भी इसे समझ क्यूँ नहीं आता ? इनकी भलाई के लिए ही तो मैं कह रहा हूँ ।" हर दिन यही बातें सुन सुनके मैं थक गई हूँ । यह बात सौम्या दीदी अच्छे से जानती भी है । अब और मुझसे सुना नहीं जाता । इसलिए आँगन के दरवाजे को जोर से खोलते हुए मैं बाहर निकली । अब कुछ ठंडी हवा

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023

Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 106.

खोना हो मेरे दिमाग को शांत कर पाएगा।

मेरे पैर अपने-आप उस बड़े बड़ी सी पेड़ के पास चलता रहा। वहा पेड़ जिसके नीचे माँ ने मुझे इंतज़ार करने को कहा था। मैं तब सिर्फ आठ साल की थी। जन्म से उस समय तक मेरा परिवार सिर्फ माँ ही थी। मेरी ज़िंदगी का सारी खुशी-भरी याद उनके साथ बीती हुई है।

जब मैं उस पेड़ के नीचे पहुँची सारी याद फिरसे ताजा हो गई। और मेरा मन पिछले दस साल की तरह इस बार भी शांत हो गया। आज भी मुझे अच्छे से याद है, माँ ने मुझसे वादा किया की वह मुझसे मिलने मेरे जन्मदिन पर ज़रूर आएँगी। और मेरी माँ अपने वादों को निभानेवालों में से है। सौम्या दीदी से भी मैं यही मिली थी। उन्होंने जब मुझे यहा अकेले देखा तो मेरे पास आकर पूछताछ की। और तब ही मुझे अपने घर लाई। वह मुझसे बेहद प्यार करती है। अपनी खुदकी बेटी की तरह। और उनके घर में मुझे कोई कमी नहीं

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952.   Participant Code: 106

महसूस ~~करना~~ होना चाहिए। मगर हर दिन कुछ ~~भर~~ कमी थी ~~मेरे लिए~~। वह थी उनकी कमी, जिन्होंने मुझे जनम दिया। सौम्या दीदी चाहे जितना भी मुझे खुदकी बेटी की तरह पालें मैं कभी उन्हें "माँ" नहीं पुकार पाई। और ~~इ~~ इसका दुख उनके चहरे पे हमेशा साफ लिखा हुआ होता है।

अब यहाँ से हिलने नहीं वाली मैं। मुझे पता है। माँ ज़रूर आएगी। दस साल जो हुए है। ~~अ~~ कभी मुझे डर लगता था की वह डरती होगी, की मैं ~~उनसे~~ उनसे नाराज़ हूँ। और इसलिए वे नहीं आती वापिस। तब मेरी ख्वाहिश रहती है कि मैं ~~कभी~~ कैसे न कैसे उनसे कह पाऊँ की "जाने ~~ज~~ कोई भी कुछ भी कहें। मैं आपसे नाराज़ नहीं हूँ माँ। बस आपका ~~चाह~~ चहरा देखना से ही मेरी सारी ~~न~~ नाराज़गी दूर जाएगी"। लेकिन सिर्फ मन ~~मे~~ में ही यह कहकर आशा करती रही की कैसे भी माँ ~~वे~~ ~~मेरी~~ ~~न~~ ~~बातें~~ ~~सुन~~ ~~कैसे~~ ~~कैसे~~ मेरी बातों को सुन पाए।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

बैठे-बैठे समय का अंदाज़ा ही नहीं हुआ। रात के बारह बज गये थे। अब कोई उम्मीद नहीं। शायद वो अगली जन्मदिन ही आए......

"शायद-शायद" कहते हुए और तीन साल गुज़र गये। अब मैं इक्कीस साल की हूँ। मेरी पढ़ाई सारी खत्म हो गई। मेरी नौकरी भी लग गई। ज़िंदगी ऐसे ही गुज़रती जा रही थी। मगर क्या मैं खुश थी? यही तो समस्या थी। माँ की कमी मेरी ज़िंदगी में नहीं भर पायी। कुछ दिन उनकी कम याद आती थी। मगर कुछ दिन मुझसे रहा नहीं जाता था।

इस दिन वही कुछ दिनों में से एक थी। पढ़ाई, नौकरी, शादी, बच्चे कोई भी बात जो साधारण लोग करते थे। मुझे यह सब करना मुश्किल लगने लगा। मेरे पास के सभी लोग परेशान होने लगे। कुछ तो गुस्सा भी थे। कहते हैं अरे उसकी माँ नहीं तो क्या? दुनिया

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Item Code: 952 Participant Code: 106.

मैं सिर्फ वही हूँ जिसकी माँ नहीं है? और यह तो
सिर्फ बहाने हैं ज़िंदगी से भागने की। "यह तो
सिर्फ दिखावा है"। यह सारी बात मैं
इतनी बार सुन चुकी हूँ कि अब मुझे भी अपने -
आप लगने लगा "क्या वाकई में मैं सिर्फ
बहाने बना रही हूँ?" "क्या दुनिया में सिर्फ
मैं ही हूँ जिसे अपने ~~कहना वाला किसीको~~ परिवार
वाले किसी की इतना चिंता है?"। कई सवाल
मेरे मन में घूमता रहा। ऐसा लग रहा था
कि मेरा सिर ~~कभी~~ कभी भी फट जाएगा।
फिर से मैं पहुँची वही जगह पर। ऐसा
लग रहा था की मैं फिरसे वह आठ साल की
बच्ची बन गई। मगर वाकई में मैं कभी बड़ी ही नहीं
हुई। मेरा मन उसी दिन पर अटका हुआ था
जब सिर्फ मेरा शरीर ही आगे चल पाया।
आज मैं यहा सिर्फ माँ की इंतज़ार ही नहीं कुछ
और करने की सोच रही हूँ। मेरे हाथ में
जो चाकू थी उसपे मेरी नज़र लगी। लेकिन
हर जन्मदिन की तरह आज भी मैं पूरे दिन

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 106.

यहीं बैठे इंतज़ार करूँगी ।
बैठे - बैठे मैं सो गई थी । जब आँख खुली तब बारह बज चुकी थी । अब और मुझे यहाँ नहीं रहना था । क्या पता माँ को कुछ हो गया हो ? । अगर ऐसा है तो मैं ज़रूर उनके पास जाके पूछूँगी की वे ~~अबतक~~ मुझसे मिलने क्यों नहीं आई । मैं नाराज़ हूँ उनसे बहुत । इसी लिए मैंने यह कदम उठाने की सोची ।
मेरे हाथ के चाकू को मैं कसके पकड़ी । आँखों को ज़ोर से बंद किए हुए एक बारी मैंने ही ~~खुद~~ खुतके हाथ को काटा ।
लाल ~~खून~~ खूनमेरे ~~कपड़े~~ सफेद कपड़ो को रंग दी । मेरी ~~आँखें~~ मेरी आँखे बंद होने लगी, शरीर कमज़ोर होने लगा । पास में मैंने जो कागज़ की टुकड़े पे लिखके ~~छो~~ छोड़ा था, उसपे मेरी नज़र लगी । दूर से कोई मुझे पुकार रहा था । चौंठी की आवाज़ थी । वह कुछ कह रही थी । आँखें नहीं खुल पा रही थी मेरी, मगर ~~अपनी~~ अपने कानों को तेज़ करने की कोशिश की ।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 106.

"दीदी ! आप कहाँ हो ? आपकी माँ का खत आया है। जल्दी ~~आइये~~ आइये!" मैंने आँखें आधी खोलकर मेरे पास की उस कागज़ के टुकड़े पे नज़र डाली। वही कागज़ का टुकड़ा जिसमें मैंने कुछ ही देर पहले लिखा था "कब तक इंतज़ार करूँ मैं आपका..." ऐसे ही मेरी आँखें बंद हो गई ....

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)